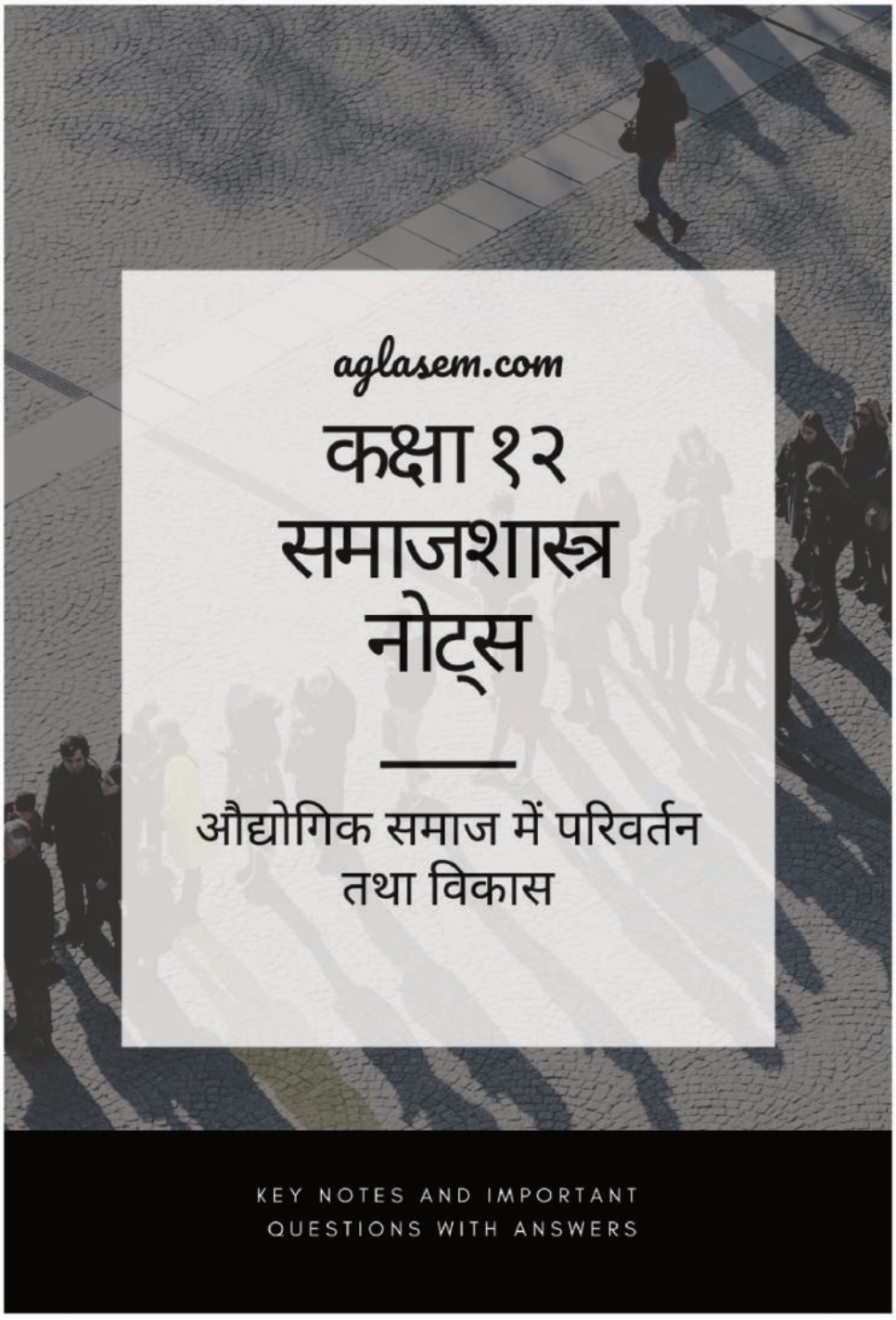
aglasem.com
कक्षा १२
समाजशास्त्र
नोट्स
औद्योगिक समाज में परिवर्तन
तथा विकास
KEY NOTES AND IMPORTANT
QUESTIONS WITH ANSWERS

पाठ 5

औद्योगिक समाज में परिवर्तन तथा विकास

मुख्य बिन्दु

1. **औद्योगिक समाज की कल्पना**

- प्रौद्योगिकी में होने वाले परिवर्तन सामाजिक संबंधों में भी परिवर्तन लाते हैं तथा समाजिक संस्थाएँ (जाति, नातेदारी, लिंग) को भी प्रभावित करते है। औद्योगिकरण से बहुत अधिक श्रम विभाजन होता है। लोग अधिकतर अपने कार्यो का अंतिम रूप नहीं देख पाते क्योंकि उन्हें उत्पादन के एक छोटे से पुर्जे को बनाना होता है। अक्सर यह कार्य दोहराने और थकाने वाला होता है, लेकिन फिर भी बेरोजगार होने से यह स्थिति अच्छी है। मार्क्स ने इसे अलगाव कहा है जिसमें लोग अपने कार्य से प्रसन्न नहीं होते उनकी उत्तरजीविका भी इस बात पर निर्भर करती है कि मशीनें मानवीय श्रम के लिए किना स्थान छोड़ती है।
- औद्योगीकरण कुछ स्थानों पर जबरदस्त समानता लाता है जैसे- रेलगाड़ियाँ, बस आदि में जातीय भेदभाव न होना। तो दूसरी तरफ कारखानों और कार्यस्थलों में भेदभाव अभी भी देखा जा सकता है।

2. **भारत में औद्योगीकरण**

- 1999-2000 में भारत में लगभग 60 प्रतिशत लोग तृतीयक क्षेत्र, 17 प्रतिशत द्वितीयक क्षेत्र, 23 प्रतिशत तृतीयक क्षेत्र में कार्यरत थे। कृषि कार्यो में तेजी से ह्रास हुआ और सरकार उन्हें अधिक आमदानी देने में सक्षम नहीं है।
- संगठित/ औपचारिक क्षेत्र की इकाई में 10 और अधिक लोगों के पूरे वर्ष रोजगार में रहने से इन क्षेत्रों का गठन होता है। पेंशन व अन्य सुविधाएँ मिलती हे। कृषि, उद्योग असंगठित/औपचारिक क्षत्र की इकाई में 10 और अधिक लोगों के पूरे वर्ष रोजगार में रहने से इन असंगठित/ अनौपचारिक क्षेत्र में आते है। असंगठित क्षेत्र में रोजगार स्थाई नहीं होता है। पेंशन व बीमा का समुचित प्रावधान नहीं होता है।

3. **भारत के प्रारम्भिक वर्षो में औद्योगीकरण**- रूई, जूट, रेलवें तथा कोयला खाने भारत के प्रथम उद्योग थे। स्वतंत्रता के बाद भारत ने परिवहन संचार, ऊर्जा, खान आदि को महत्व दिया गया। भारत की मिश्रित आर्थिक नीति में (निजी एवं सार्वजनिक उद्योग) दोनों प्रकार शामिल थे।

4. **भूमंडलीकरण, उदारीकरण एवं भारतीय उद्योग में परिवर्तन**

- 1990 से सरकार ने उदारीकरणा नीति को अपनाया है तथा दूर संचार, नागरिक उड्डयन ऊर्जा आदि क्षेत्रों में निजी कंपनियाँ विशेषकर विदेशी फर्मो को प्रोत्साहित किया जा रहा है। बहुत-सी भारतीय कपंनियों को विदेशियों ने खरीद लिया है। तथा कुछ भारतीय कपंनियाँ बहुराष्ट्रीय कपंनियाँ बन गई है। इसके कारण आमदनी की असमानताएँ बढ़ रही है। बड़े उद्योग में सुरक्षित रोजगार कम हो रहे हैं। किसान तथा आदिवासी लोग विस्थापित हो रहे है।
- सरकार सार्वजनिक कंपनियों के अपने शेयर्स को निजी क्षेत्र की कंपनियों को बेचने का प्रयास कर रही है जिसे विनिवेश कहा जाता है। इससे कर्मचारियों को नौकरी जाने का खतरा रहता है।

5. **लोग किस तरह काम पाते हैं**-

- रोजगारों के विज्ञापन द्वारा बहुत कम लोग रोजगार पाते हैं, जबकि निजी सम्पर्को द्वारा स्वनियोजित लोग काम के आधार पर व्यवसाय करते है।
- एक फैक्ट्री के कामगारों रोज़गार देने का तरीका भिन्न होता है। कामगार ठेकेदारों से रोज़गार पाते थे। ठेकेदार गाँव जाता है वहाँ काम चाहने वालों से इसके बारे में पूछता है। वह उन्हें कुछ पैसा उधार भी देता है। जिसे अग्रिम दिहाड़ी माना जाता है। जब तक उधार नहीं चुक जाता वह बिना पैसे के काम करता है।
- कार्यकारिणी और यूनियन दोनों ही अपने लोगों को काम दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कुछ कामगार अपने ही बच्चों को अपने बदले काम पर लगाना चाहते हैं।
- बहुत-सी फैक्ट्रियों में बदली कामगार भी होते हैं जो कि छुट्टी पर गए हुए मजदूरों के स्थान पर काम करते हैं। उन्हें सबके समान स्थायी पद और सुरक्षा नहीं दी जाती है।

6. **काम को किस तरह किया जाता है-**

- मैनेजर कामगारों को नियंत्रित करके अधिक काम कराते हैं। कामगारों से अधिक कार्य करवाने के दो तरीके होते हैं (कार्य के घंटों में वृद्धि तथा निर्धारित समय में उत्पादित वस्तु की मात्रा को बढ़ा देना।)।
- उत्पादन बढ़ाने के अन्य तरीका है कार्य को संगठित रूप से करना। इसे टेलरिज्म या औद्योगिक इंजीनियरिंग भी कहते है। एक अमेरिकन फैडरिक विनस्लो टेलर ने वैज्ञानिक प्रबंधन के नाम से इस व्यवस्था का आविष्कार किया। इस व्यवस्था में स्टापवाच की सहायता से छोटे-छोटे पुर्जो को तोड़र कामगारों में बांटना, कार्य को समय के साथ पूरा करना कार्य को तेज करने के लिए एसेंबली लाइन का प्रयोग करना कार्य, करने की गति को कन्वेयर बेल्ट के साथ गति रखना आदि। कारखाने में सभी कार्य ब्राह्य स्त्रोतों से करवाते है। इस प्रकार का कार्य कम्पनी को सस्ता पड़ता है।
- अधिक मशीनों वाले उद्योगों में, कम लोगों को काम दिया जाता है, लेकिन जो होते है उन्हें भी मशीनी गति से काम करना होता है जैसे मारूति गति से काम करना होता है जैसे मारूति उद्योग लिमिटेड। इसमें प्रत्येक मिनट में दो कारें तैयार होकर आ जाती है। प्रत्येक कामगार 40 वर्ष का होने तक पूरी तरह थक जाता है ओर स्वैच्छिक अवकाश ले लेता है। यह कामगारों में अधिक तनाव की वहज से होता है।
- साफ्टवेयर, आई.टी. क्षेत्रों में काम करने वाले शिक्षित होते है। उनका कार्य भी टायलरिज्म लेबर प्रक्रिया के अनुरूप ही होता है। आई.टी. क्षेत्र में **'समय की चाकरी'** -औसतन 10-12 घंटे का कार्यदिवस और रातभर कार्य करने वाले कर्मचारी भी असामान्य बात नहीं है, जिसे नाइट आउट कहते है। जब उनकी परियोजना की अंतिम सीमा आ जाती है। लंबे कार्य घंटों का होना एक उद्योग की केंद्रिय 'कार्य संस्कृति' होती हे। एक आठ घंटे काम करने वाले इंजीनियर के श्रम के आधार पर काम को अंतिम सीमा तक पहुँचाने के लिए उसे अतिरिक्त घंटों और दिनों तक काम करना पड़ता है। ऑफिस में देर तक रूक जाते है जो कि या तो साथियों के दबाव के कारण होता हे अथवा वे अपने अधिकारियों को दिखाना चाहते हें कि वे कड़ी मेहनत कर रहे हो।
- संयुक्त परिवार जो कि लुप्त हो गए थे औद्योगीकरण के कारण फिर से बनने लग गए हैं।

7. **कार्यावस्थाएँ**

- सरकार ने कार्य की दशाओं को बेहतर करने के लिए बहुत से कानून बना दिए है।
- खदान एक्ट 1952 ने मजदूरों के विभिन्न कार्यो को स्पष्ट किया है। भूमिगत खदानों में मजदूरों को आग, बाढ़, ऊपरी सतह के धँसने, क्षयरोग आदि का खतरा रहता है। गैसों के उत्सर्जन से तथा ऑक्सीजन की कमी से साँस से संबंधित बीमारियाँ हो जाती है।

8. **घरों में होने वाला काम**- घरों में आज अनेक काम किए जाते हैं लेस बनाना, बीड़ी बनाना, जरी, अगरबत्ती, गलीचे, एवं अन्य कार्य अधिकतर महिलाएँ व बच्चे करते है। एक एजेन्ट इन्हें कच्चा माल दे जाता है। तथा पूरा करवा कर ले जाता है। इन्हें कितना पैसा मिल पाता है बीड़ी उद्योग में पाई डायाग्राम को देखे कि कैसे बीड़ी मूल्य को बांटा गया है।

9. **हड़ताले एवं मजदूर संघ**- फैक्ट्री तथा अन्य उद्योगों में कामगारों के संघ है। जिनमें जातिवाद तथा क्षेत्रीयवाद पाया जाता है।

- मजदूर संघ- किसी भी मिल, कारखाने में मजदूरों के हितों की रक्षा करने के लिए मजदूर संघ का गठन किया जाता है। सभी मजदूर इसके सदस्य होते है।
- हड़ताल- अपनी मांगों को मनवाने के लिए कर्मचारी हड़ताल करते है। कभी-कभी काम की बुरी दशाओं के कारण कामगार हड़ताल पर जाते हैं।
- तालाबंदी- मिल मालिकों द्वारा मिल के मुख्य द्वारा पर ताला लगाना। (1982 की बम्बई टैक्सटाइल मिल की हड़ताल जो व्यापार संघ के नेता दत्ता सामंत के नेतृत्व में हुई थी, जिसमें लगभग ढ़ाई लाख कामगारों के परिवार पीड़ित हुए। उनकी मांग बेहतर मजदूरी तथा संघ बनाने की अनुमति प्रदान करता था। कामगार किसी अन्य मजदूरी या कार्य करने को मजबूर हो जाते हैं इनका भविष्य कौन तय करेगा? मिल मालिक सम्पदा व्यापारी, सरकार या स्वयं ये जटिल प्रश्न है?

2 अंक प्रश्न

1. कामगार हड़ताल पर क्यों जाते हैं?
2. तालाबन्दी में मालिक क्या करता है?

3. संगठित और असंगठित क्षेत्र में अन्तर लिखिए।
4. औद्योगिक इन्जीनियरिंग (टेलिरिज्म) क्या होता है?
5. समय की चाकरी से आप क्या समझते है?
6. औद्योगिकी में लोग अपने उत्पादन का अन्तिम रूप क्यों नहीं देख पाते?
7. विनिवेश किसे कहते है? *[Outside Delhi-2018]*
8. हड़ताल और तालाबंदी में क्या अंतर है?
9. बंबई कपड़ा मिल हड़ताल की दो माँगे कौन-सी थी?
10. बदली कामगार कौन होते है?

4 अंक प्रश्न

1. उद्योगों के प्राथमिक क्षेत्र कौन से है? असंगठित क्षेत्र के उद्योग क्या होते हैं?
2. 40 वर्ष तक अधिकाशं व्यक्ति उद्योगों में थक जाते हैं। इसमें प्रबन्धकों की भूमिका क्या है?
3. उदारीकरण के कारण कौन-कौन से उद्योग प्रभावित हुए है?
4. उद्योगों में लोग किस प्रकार से काम पाते हैं?
5. भारत में स्वतंत्रता के बाद औद्योगिक क्षेत्रों में क्या बदलाव आए?
6. भूमिगत खदानों में मजदूरों को किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है?
7. घर में किया जाने वाला कार्य अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण भाग है। उदाहरण दीजिए। *[Outside Delhi-2018]*

6 अंक प्रश्न

1. कामगारों की कार्य अवस्थाएं किस प्रकार की है उदाहरण देकर समझाइए।
2. उदारीकरण का भारत के उद्योगों पर क्या प्रभाव पड़ा है? बहुउद्देशीय कम्पनी क्या होती है?